



शैक्षणिक जगतना शैक्षिक पडकारो अने भयस्थानो

Dr. Chandrika K. Bhagora
M.A., M.Ed., Ph.D. (Education)

प्रस्तावना :

कोइपण देशना विकासनो मुख्य आधार ते देशमा अपाता शिक्षण पर होय छे. शिक्षणनी प्रणाली, पाठयक्रम, संगठन, विद्यालय, शैक्षणिक साधनो, शिक्षणना ध्येयो वगरे बाबतो गमे तेटली श्रेष्ठ होय परंतु तेनी सफळता त्यारे ज सिध्द थाय छे जयारे शिक्षक अेक जीवंत व्यकित तरीके तेमां पोताना प्राण रेडी कार्यशील बने. आ द्रष्टिअे जोतां शिक्षणनी समग्र प्रक्रियानुं केन्द्रबिंदु शिक्षक छे. प्रवर्तमान समयमा शिक्षणना स्वरूपने सुधारवाना प्रयत्नोमा शिक्षक शिक्षण परत्वे खास ध्यान आपवुं जोइशे. कारण के जेवा प्रकारनुं शिक्षक शिक्षणनुं स्वरूप हशे तेवा प्रकारना शिक्षको समाजमा तैयार थशे. आथी शिक्षक शिक्षणना स्वरूप विशेषे गंभीरताथी विचारवुं जोइशे. भविष्यमां उभा थनार पडकारो तथा भयस्थानो विशेषे पण पुरेपुरी विचारणा करवी पडशे.



शिक्षक शिक्षणना पडकारो अने भयस्थानो

शिक्षक शिक्षण सामे मुख्यत्वे बे प्रकारे पडकारो उभा थवानो भय छे जे नीचे मुजब छे :

शिक्षक शिक्षण संस्थाओना संख्यात्मक विस्तरण सामे पडकार :

प्रवर्तमान समयमा वधती जती वसतीने कारणे शिक्षण संस्थाओमां जंगी वधारो थतो जोवा मळे छे. शिक्षण संस्थाओना संख्यात्मक विस्तरणने कारणे आ संस्थाओ सामे केटलांक पडकारो तथा भयस्थानो उभा थया छे जेवा के,

भौतिक सुविधाओनुं विस्तरण :

पडकार :

शिक्षक शिक्षणनी संस्थाओनुं संख्यात्मक द्रष्टिअे झडपी विस्तरण थइ रहयु छे. आथी शिक्षक शिक्षण संस्थाओ भौतिक द्रष्टिअे आधुनिकताथी सुसजज होवी जोइअे तेमज विद्याकीय द्रष्टिअे नवीन प्रवाहो अने टेकनोलोजीना जोडाण युक्त संस्थाओ होवी जोइशे.

भयस्थान :

जो शिक्षणनी संस्थाओ पासे पर्याप्त मात्रमां भौतिक सगवडो नहीं होय तो ते स्पर्धात्मक दोडमां उणी उतरशे तेमज विद्याकीय द्रष्टिअे सुसजज नहीं होय तो ते बदलता समाज साथे रही शिक्षण आपी शकशे नहीं अने अंते ते निष्फळ जशे.

मकानोनुं कद :**पडकार :**

शिक्षण संस्थाओना मकानो खुब विशाल कदना होवा जोइअे. जेमां पर्याप्त मात्रमां वर्गखंडो, लायब्रेरी, लेबोरेटरी, कोम्प्युटर-इन्टरनेट खंड, अध्यापक खंडो, विशाल ओफिस तथा सुसजज कार्यालय उपरांत विभिन्न लेबोरेटरी वगैरे प्रकारनी आवश्यक सुविधाओवाळु शिक्षक शिक्षण संस्थानुं मकान होवुं जोइअे.

भयस्थान :

प्रवर्तमान समयमा शिक्षक शिक्षण अे अेक उमदा कार्य मानवाने बदले अेक प्रकारना व्यवसाय तरीके जयारे जोवामा आवे छे तयारे घणी वखत गमे ते प्रकारना मकानोमा शिक्षण संस्थाओने मान्यता आपी देवाय छे. आ वस्तु स्थिति योग्य गणाय नही. खरा अर्थमां शिक्षण संस्था तयारे ज सातु कार्य करी शके जयारे ते विद्याकीय द्रष्टिकोणथी शरू करेल होय नहीं के व्यावसायिक.

मकानोनुं स्थान :**पडकार :**

वधती जती वसतीने कारणे लोकोनी शहरीकरण तरफना दोटने कारणे शहरोमां आजे गली गलीमां के खुणेखुणे शाळाओ तथा संस्थाओ जोवा मळे छे. संस्थाओनी आसपासनुं वातावरण शिक्षणने अनुरूप छे के केम आ बाबते गंभीरताथी विचारवामां आवतु नथी. शिक्षणनी संस्थाओ गामथी थोडे दुर प्राकृतिक वातावरणमां होवी जोइअे.

भयस्थान :

शिक्षणनी संस्थानी आसपास गीच वसवाट, कारखानाओ, फेकटरीओ, सिनेमाघरो वगैरे जेवां अन्य परिबळो हशे तो शिक्षको / विद्यार्थीओना अभ्यास पर आसपासना वातावरणनी चोककस असर थशे. जो शिक्षण संस्था कुदरती वातावरण वच्चे आवेल हशे तो तेनी पण अेक अलग ज असर जोवा मळशे आथी शिक्षण संस्थाओना मकानोना स्थान विशे गंभीरताथी विचारवु जोइअे.

शिक्षक शिक्षणनी संस्थाओनी गुणात्मक सुधारणा सामे पडकार :

शिक्षक शिक्षणनी संस्थाओनुं कार्य मात्र शिक्षकोने तालीम आपवा पुरतु मर्यादित नथी. परंतु आ संस्थाओअे अेवी व्यवसायी तालिम आपवानी छे जेना आधारे तैयार थता शिक्षको देशना करोडो बाळकोनां भविष्यना घडवैया बनी शके. आ द्रष्टिअे शिक्षक शिक्षणनी संस्थाओ सामे गुणात्मक सुधारणा करवा अंगे पडकारो उभा थशे जे आ मुजब होय शके.

शिक्षकोनो नीचो दरज्जो :**पडकार :**

तालिम पामेल शिक्षकोनी संख्याओमा दिन-प्रतिदिन जे झडपे वृद्धि थती जाय छे अे संदर्भे शिक्षकोनां दरजजामा निम्नता आवती जती जोवा मळे छे. शिक्षकोने आर्थिक अने सामाजिक द्रष्टिअे तेमज जे दरजजा माटे ते लायक छे ते दरजजानुं कार्य मळी शकतुं नथी.

भयस्थान :

जो शिक्षकोने तेमना दरजजा अनुसार सामजिक, आर्थिक के व्यवसाय दरजजो नहीं मळे तो तेओमां अेक प्रकारनो मानसिक असंतोष उभो थशे. आ असंतोष तेनां कार्य करवानी रीत पर असर करशे अने तेनी असर भविष्यना नागरिक अेवां कलासरुमनां बाळको पर थशे !

तालिमी शिक्षकोनी पसंदगीमां खामी :**पडकार :**

शिक्षक शिक्षणनी संस्थाओ तालिम आपवा माटे जे रीते शिक्षकोनी पसंदगी करे छे ते संपूर्ण योग्य पध्दति छे तेम कही शकाय नहिं. घणीवखत घणा तालिमी शिक्षको अेवां पण शिक्षक तालिम लेवा जोडाय जाय छे जेओ खरेखर शिक्षकना व्यवसायने पसंद पण करता नथी अथवा ते माटे लायक पण होता नथी. पसंदगीमा मात्र टकावारीने ज ध्यानमा न लेतां शिक्षक बनवानी लायकात धरावता योग्य उमेदवारो पसंद करी शकाय तेवी अन्य कोइक पध्दति शोधी काढी तेनो अमल थवो जोइअे.

भयस्थान :

जो शिक्षकना व्यवसाय प्रत्ये अभिरुचि न धरावता अथवा लायकात न धरावता उमेदवारो मात्र टकावारीना धोरणे शिक्षकनी तालिम मेळवी शिक्षको बनशे तो ते बाबत देशना भविष्य माटे खतरारूप बाबत बनशे.

सैद्धांतिक समज अने प्रायोगिक कार्य वच्चे असंगतता :**पडकार :**

शिक्षक शिक्षणनी संस्थाओमा तालिम दरम्यान वर्गशिक्षणनी जे सैद्धांतिक अने प्रायोगिक समज अपाय छे ते मुजब वास्तविक रीते शाळाओमा दाखल थया बाद ते रीते वर्ग शिक्षण थतु जोवा मळतु नथी.

भयस्थान :

जो तालिमी शिक्षको पोताना वर्गखंडमा ट्रेनिंग दरम्यान शीखेल सिध्दांतो अने प्रयोगोनो उपयोग नही करे तो असरकारक वर्ग शिक्षण आपी शकशे नही. तेमज तेणे तालिम पाछळ खर्च करेल समय शकित व्यर्थ जशे.

जूनी पध्दतिओ द्वारा वर्ग शिक्षण :**पडकार :**

शिक्षक तालिम दरम्यान जे विभिन्न वर्गशिक्षणनी पध्दतिओ शीखवाय छे तेनो वास्तविक वर्ग शिक्षणमां ओछो अमल जोवा मळे छे. मोटाभागे परंपरागत रीते चाली आवती व्याख्यान पध्दतिनो ज उपयोग थतो जोवा मळे छे. जूनी पध्दतिओ वर्गशिक्षणने निष्क्रिय अने निरस बनावे छे.

भयस्थान :

टेकनोलोजीना युगमा जो शिक्षक अवनवी पध्दतिओ वर्गमां नही अपनावे तो तेनुं शिक्षण "आउट ओफ डेइट" प्रकारनुं शिक्षण बनी जशे. शिक्षके मात्र व्याख्यान पध्दति ज न अपनावता विभिन्न विद्यार्थी केन्द्री पध्दतिओ अने प्रयुक्तओनो उपयोग करवो पडशे. जो आम नही थाय तो ते शिक्षकनुं शिक्षण कार्य निरस बनी जशे.

तालिमी कोर्ष माटे टुंको समयगाळो :**पडकार :**

तालिमी कोलेजो माटे शिक्षार्थीओना प्रवेश थी शरू करी तेओनी तालिम संपूर्ण थवा वच्चेनो समयगाळो टुंको गणी शकाय. घणी वखत तालिमार्थीने प्रवेश माटेनी घणी लांबी प्रक्रियामांथी पसार थता घणो समय लागी जाय छे परिणामे ते शिक्षार्थी घणा टुंका गाळा माटे तालिम मेळवी शके छे.

भयस्थान :

तालिमी शिक्षकोने प्रवेश बाद पुरता समय माटे जो तालिम लेवानो मोको आपवामा नही आवे तो तेनी तालिममा उणप रही जवा संभावना रहशे. तालिमार्थीअे टुंका समयगाळामा सैद्धांतिक तेमज प्रायोगिक समज

केळववी पडे छे. जो तालिमार्थीओने पुरतो समय फाळवी नहीं शकाय तो तेनी तालिम अंगे घणी क्षतिओ रही जवा संभावना रहेशे.

सेवाकालीन शिक्षक शिक्षण कार्यक्रमोनी अवगणना :

पडकार :

तालिमी शिक्षको माटे तालिम दरम्यान विभिन्न कार्यक्रमोनुं आयोजन थतु रहे छे. परंतु तालिम बाद ते शाळामा शिक्षक तरीके जोडाया बाद सेवाकालीन शिक्षक तालिम कार्यक्रमोनुं आयोजन प्रमाणमा ओछु जोवा मळे छे.

भयस्थान :

जो समयांतरे शिक्षकोने पोतानुं ज्ञान ताजुं करवा सेवा कालीन कार्यक्रमोमां भाग लेता करवामा नहीं आवे तो तेओनुं ज्ञान धीमे धीमे घरेडीयुं बनी जशे. शिक्षकमा नवीन द्रष्टिकोण विकसे, नवा प्रवाहोथी वाकेफ करवा के नवी बाबतो शीखववा सेवाकालीन कार्यक्रमोनुं आयोजन नहीं करवामा आवे तो शिक्षकना वर्गशिक्षण कार्यमा निरसता आवी जवा खतरो उभो थशे.

शिक्षक शिक्षण अंगे सूचनो :

शिक्षक शिक्षण अंगे कोठारी पंचे करेल सूचनो आ मुजब छे.

- (१) शिक्षक तालिमनुं व्यवसायथी अलगपणुं दूर करवुं.
- (२) व्यवसायी तालिममा सुधारो करवो – स्व-अध्ययन अने गुप डीशकशन पध्दतिओ अपनाववी, तालिमी संस्थाओनी गुणवतामा सुधारो करवो.
- (३) तालिमनो समयगाळो – स्नातक विद्यार्थीओ माटे शिक्षक तालिमनो समयगाळो अेक वर्ष राखवो. जेमां २३० दिवस कार्य करवुं.
- (४) नवा व्यवसायी कोर्षीझनुं आयोजन – आचार्यो, शिक्षक-प्रशिक्षको, शैक्षणिक संचालको वगरे माटे ओरिअेन्टेशन कोर्षनुं आयोजन करवुं.
- (५) शिक्षणमा पोस्ट ग्रेजयुअेट कोर्षमा लवचीकता राखवी.
- (६) तालिमी संस्थाओमा प्रवेश जे विषय साथे विद्यार्थी ग्रेजयुअेट थयो होय ते सिवायना विषयो पर अेडमीशन न आपवुं. तेमज योग्य विद्यार्थीने स्कोलरशीप, स्टाइपेन्ड वगरे आपवुं.
- (७) तालिमी सुविधाओनुं विस्तरण करवुं.
- (८) सेवाकालीन कार्यक्रमोनुं आयोजन करवुं.
- (९) शिक्षकने व्यावसायिक द्रष्टिअे तैयार करवा आ माटे ओरिअेन्टेशन कार्यक्रमोनुं आयोजन करवुं, नवा दाखल थयेल अध्यापकोने संस्थामा अनुकूल थवानी तक आपवी तथा अनुभवी अध्यापको / शिक्षकोनां व्याख्यानो सांभळवानी तक आपवी.
- (१०) शिक्षक शिक्षणमा गुणवताना धोरणो जळवाय ते माटे यु.जी.सी. द्वारा आर्थिक सहाय अपावी जोइअे तेमज यु.जी.सी. स्टेन्डिंग कमिटी द्वारा तेनां घोरणो जाळववा प्रयत्न थवा जोइअे.

उपसंहार :

शिक्षक शिक्षणना महत्व, विस्तरण अने तेनी समक्ष उभा थतां विभिन्न पडकारो तेमज ते पडकारोना उकेलनी चर्चा परथी आपणे आवतीकालनुं शिक्षक शिक्षण केवुं होवुं जोइअे तेनो ख्याल मेळवी शकीअे. शिक्षक शिक्षणने सफळ बनाववुं हशे तो तेणे बदलता जता समय साथे ताल मीलावी जरूरी परिवर्तनो अपनाववा पडशे.

संदर्भो :

- (१) तिवारी के.के. (१९९३) "भारतीय शिक्षा : विकास और समस्यायें", होराइज़न १९८१ पब्लिशर्स, इलाहाबाद.
- (२) भाटिया के.के. तथा अन्य १९८१, "मोर्डन इन्डियन अेजयुकेशन अेन्ड इट्स प्रोबलेम्स, प्रकाश ब्रधर्स अेजयुकेशनल पब्लिशर्स, जलंधर (पंजाब).
- (३) वालिया जे.अेस. (१९८७), पाल पब्लिशर्स, जलंधर (पंजाब).



Dr. Chandrika K. Bhagora
M.A., M.Ed., Ph.D. (Education)